महिलाएं ही बचा सकती हैं खेती

■ बाबा मायाराम

परंपरागत कृषि का अधिकांश कार्य महिलाओं पर निर्भर है। वे खेत में बीज बोने से लेकर उनके संरक्षण- संवर्धन और भंडारण तक का काम बड़े जतन से करती हैं। पशुपालन से लेकर विविध तरह की हरी सब्जियां व फलदार वृक्ष लगाने व उनके परवरिश काम करती हैं। जंगलों से फल-फूल, पत्ती के गुणों की पहचान करना व संग्रह करने में उनकी प्रमुख भूमिका रही है। वे जैव विविधता की जानकार और संरक्षक हैं। यानी वे प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण से लेकर खाद्य सुरक्षा का महत्वपूर्ण काम करती रही हैं।

लेकिन जबसे खेती में मशीनीकरण हुआ है तबसे महिलाओं की भूमिका सिमटती जा रही है। जबकि पूर्व में खेती में सिर्फहल-बक्खर चलाने को छोड़कर महिलाएं सभी काम करती थीं। बल्कि छत्तीसगढ़ में तो कुछ जगह हल भी चलाती हैं। पारंपरिक खेती में बीजों का चयन, बीजोपचार, बुआई, निंदाई-गुड़ाई और कटाई-बंधाई तक की पूरी प्रक्रिया में महिलाएं जुड़ी थीं। खेतों में फसल की रखवाली, मवेषियों की परवरिश और गोबर खाद बनाने जैसे खेती से जुड़े काम उनके जिम्मे थे। हालांकि पहाड़ और जंगल पट्टी में अब भी महिलाएं खेती के काम में संलग्न हैं।

कड़कड़ाती ठंड हो या मूसलाधार बारिश या फिर चिलचिलाती तेज धूप महिलाएं सभी परिस्थितियों में खेती का काम करती रही हैं। खेती के विकास में उनका योगदान महत्वपूर्ण है। इसके अलावा, भोजन के लिए ईंधन जुटाना, खाना बनाना , ढोरों को खेतों से घास लाना और फिर खेतों में काम करने जाना। और फिर खेत से आकर घर का काम करना आदि उनकी जिम्मेदारी में शामिल है। निंदाई-गुड़ाई के दौरान विजातीय पौधे और खरपतवार को फसल से अलग करना भी उनके काम का हिस्सा हुआ करता था। जब पौधों में फूल आ जाते हैं तब वे ऐसे विजातीय पौधों को आसानी से पहचानकर अलग कर देती थीं। निंदाई-गुड़ाई तीन-चार बार करनी पड़ती थी। खरपतवारनाशक के बढ़ते इस्तेमाल से उनकी भूमिका कम हो गई। बीजों के चयन में उनकी खास भूमिका होती थी। पहले खेतों में ही बीजों का चयन हो जाता था, इसमें देखा जाता था कि सबसे अच्छे स्वस्थ पौधे किस खेत में हैं। किस खेत के हिस्से में अच्छी बालियां हैं। वहां किसी तरह के कमजोर और रोगी पौधे नहीं होने चाहिए। अगर ऐसे पौधे फसलों के बीच होते थे तो उन्हें हटा दिया जाता था। फिर अच्छी बालियों को छांटकर उन्हें साफकर और सुखा लिया जाता था। इसके बाद बीजों का भंडारण किया जाता था। इन सब कामों में महिलाएं ही मदद करती थीं। बीज भंडारण पारंपरिक खेती का एक अभिन्न हिस्सा है। **(बाकी पेज 11 पर)**

24 June, 2012, Daily Chhattisgarh, Raipur